TEACHERS OF BIHAR

*The Change Makers*

# पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

फ़रवरी 2025

अंक 6

मासिक कविता संग्रह

teachersofbihar.padyapankaj.org

# पद्यपंकज काव्य संग्रह

पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

# पद्यपंकज काव्य संग्रह

## प्रकाशन सहयोग

### संपादक

देव कांत मिश्रा
मध्य विद्यालय धवलपुरा,सुलतानगंज,
भागलपुर( टीम लीडर )

### संकलनकर्ता और आवरण एवं चित्रण

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपुर सिवान

### तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

प्रिय साथियों,

आज हम एक विशेष अवसर का स्वागत करने के लिए एकत्रित हुए हैं, जब हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं। यह संग्रह न केवल एक पुस्तक है, बल्कि यह बिहार के शिक्षकों की भावनाओं, विचारों और रचनात्मकता का प्रतीक भी है। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर, हम सभी मिलकर अपने भाषा और साहित्य की समृद्धि को मान्यता देते हैं और इस काव्य संग्रह के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हैं।

बिहार, जो हमेशा से शिक्षा और संस्कृति का गढ़ रहा है, यहाँ के शिक्षकों ने इस संग्रह के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को प्रस्तुत किया है। यह कविताएँ न केवल शिक्षकों के व्यक्तिगत अनुभवों का दर्पण हैं, बल्कि समाज में उनके योगदान और संघर्षों की कहानी भी कहती हैं। प्रत्येक कविता एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ गया है—प्रेम, संघर्ष, समाज, और प्रकृति।
हम हिंदी दिवस के अवसर पर इस काव्य संग्रह का विमोचन कर रहे हैं, जो हमारी मातृभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। हिंदी, जो हमारी संस्कृति, परंपरा और पहचान का एक अभिन्न हिस्सा है, इसे संजीवनी प्रदान करना हमारे सभी का कर्तव्य है। इस संग्रह के माध्यम से हम हिंदी भाषा को समृद्ध करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमें अपने विचारों को अभिव्यक्त करने और समाज में अपनी आवाज उठाने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
इस काव्य संग्रह के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन की ओर एक कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि साहित्य समाज का आईना होता है। इस संग्रह में कवियों ने समाज की विडंबनाओं, संघर्षों और उम्मीदों को चित्रित किया है। ये कविताएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ये सोचने और विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं। हम आशा करते हैं कि यह काव्य संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि सभी पाठकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

हमारा यह प्रयास तब सफल होगा जब आप सभी का सहयोग और समर्थन हमें प्राप्त होगा। इस संग्रह को पढ़ें, विचार करें और अपने अनुभव साझा करें। हमें आपकी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है ताकि हम आगे भी ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें।

आखिर में, हम 'पद्यपंकज' काव्य संग्रह के सभी लेखकों को बधाई देता हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त किया। हम आशा करते हैं कि यह संग्रह सभी को प्रेरित करेगा और हमारी संस्कृति को समृद्ध करेगा।

धन्यवाद!
—टीचर्स ऑफ बिहार

# सम्पादक की कलम से....

आएँ! नई कविता रचाएँ।
औरों का नित ज्ञान बढ़ाएँ।।
'पद्यपंकज' उत्पल खिलाएँ।
टीओबी बगिया महकाएँ।।

प्यारे साथियों,
'पद्यपंकज' रचनाकारों हेतु टीचर्स आफ बिहार का एक सुंदर बाग है जिसमें भाँति- भाँति कविता रूपी प्रसून समयानुसार खिलते हैं और विचारों की पवित्र धाराओं और विभिन्न तरह की प्रेरणास्पद रचनाओं से सराबोर कर इसके बाग को सुरभित करते रहते हैं। इसी क्रम में एक पावन विचार मन में आया कि क्यों न एक 'मासिक कविता संग्रह' का बाग लगाया जाए तथा समग्र प्रयास से इसे पुष्पित और पल्लवित किया जाए? ऐसा विचार पाकर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

गाँधी जयन्ती के शुभ अवसर पर सत्य, लगन, निष्ठा, परस्पर सद्भाव व सहयोग की राह को अपनाते एवं यथार्थ के धरातल पर अपने विचारों को तर्क  की कसौटी पर कसते तथा मद्देनजर रखते हुए सहर्ष कह रहा हूँ कि यह मासिक कविता संग्रह न केवल शिक्षकों के लिए अपितु सभी पाठकों के लिए उपयुक्त व प्रेरणा का स्रोत बनेगा। हमारा प्रयास तभी सार्थक होगा जब आपका समुचित सहयोग व समर्थन अंतर्मन से होगा। बगैर आपके टीओबी की बगिया कैसे महकेगी? इसके लिए आपका सद्विचार, चिंतन व सहयोग ही हमें कामयाबी दिलाएगी।
अंत में, पद्यपंकज 'मासिक कविता संग्रह' के सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं जो समय-समय पर अपनी रचना से समूह तथा अपनी लेखनी को सुशोभित करते हैं तथा अपना अभिमत देते हैं।हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि यह मासिक कविता संग्रह आपको नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करेगी। आप अपनी प्रतिक्रिया व अनुभव को सतत् साझा करते रहें।

देव कांत मिश्र 'दिव्य'
संपादक

# सरस्वती वंदना

वीणा वादिनी, ज्ञान की देवी, माँ
शारदे, करूँ मैं अर्पण।
बुद्धि, विवेक, नीति की ज्योति,तेरे
चरणों में समर्पण॥
बालक बनें सुमति के धानी, माँ,
दो शुभ संकल्प विचार।
सत्य, धर्म, निष्ठा के पथ पर, रखें
सदा अनुराग अपार॥
शिक्षा से हो तेज़ उजागर,
अंधकार सब दूर टले।
शब्दों में हो ज्ञान की गंगा, हर
हृदय में प्रेम जगे॥
बल, संयम, मर्यादा बढ़े,संस्कारों
की बहे बयार।
ऐसा समाज बने कि जिसमें,रहें
सदा सुख-शांति अपार॥
हे माता! यह वरदान देना, हर मन
में शुभ भाव पले।
कर्म पथ पर हम बढ़ें निरंतर, ज्ञान
की ज्योति जगमग जले॥

**सुरेश कुमार गौरव,**
उ. म. वि.रसलपुर,फतुहा, पटना,बिहार

# मनहरण घनाक्षरी

वीणा रखती हाथ में,
सुर संगीत साथ में,
जीवन में आनंद हो,
भाव रस पीजिए।
माँ तेरी हंस सवारी,
लगती कितनी न्यारी,
धवल हो मन मेरा,
शंका हर लीजिए।
कर में पुस्तक तेरी,
हर लो अज्ञान मेरी,
ज्ञान का भण्डार भर,
कृपा अब कीजिए।
तुझसे विनती करूँ,
चरणों में शीश धरूँ,
तू ममता की खान माँ,
शरण दे दीजिए।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज, पटना

# सरस्वती वंदना

हे वीणावादिनी! देवी सरस्वती,
हमें कष्टों से उबार दें।
मूढ़मति हम संतान तुम्हारे,
हमें ज्ञान का उपहार दे।
अज्ञानता का अंधकार छाया,
राह हमको समझ न आया
हे वीणापाणि शारदे माँ!
संसार सागर से हमें तार दे।
हे श्वेतवसना माता भारती
हमारे मन में प्रेम-भाव रहे।
छल,दम्भ द्वेष से दूर होकर
एक दूजे के लिए कष्ट हम सहें।
जाति धर्म से मन में नहीं रार हो
इंसानियत मन में रहे सर्वदा
एक दूजे के लिए सदा प्यार हो।
हे कमलासना वीणापाणि
नही किसी से कभी कोई तकरार हो।
हे पुस्तकधारिणी वागीश्वरी माँ!
हमारी सारी शंका मिटाओ।
हमारे मन में जोश भर दो ऐसा,
नही कभी हमें कमजोर पाओ।
हो हमको हमारी मेहनत पर भरोसा,
मन में नहीं कभी लालच आए,
हे वरदायिनी माँ! तुम हमको वर दो,
सारे मनोरथ पूर्ण कर पाएँ।

**रूचिका**
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ
गुठनी सिवान, बिहार

# वीणा की झंकार

प्रकृति के मनोहर आँगन में, वसंत की बहार है,
वागेश्वरी के वीणा की, गूँजती झंकार है।
श्वेत पद्म व श्वेत वस्त्र हैं, श्वेत वाहन धारती,
नीर-क्षीर-विवेक प्राप्त जो सदभक्तों को तारती,
सत्य बोलें, मधुर बोलें हम, कर्कश न हों जीवन में,
वीणा के झंकृत तान से, मधुरता हो हर मन में,
जिसने जीत लिया स्वयं को, वह जीता संसार है।
वागेश्वरी के वीणा की, गूँजती झंकार है।
कोकिल-कंठी-तान सुनाये, उपवन-अमराई में,
वासंतीयुक्त पीत-पुष्प हैं, सरसों व राई में,
नवदुल्हन का रूप धार वसुन्धरा मुसकाई है,
वीणापाणि के आगमन से, प्रकृति खिलखिलायी है,
सृष्टि के कण-कण में करती, शुभता का संचार है।
वागेश्वरी के वीणा की, गूँजती झंकार है।
संगीत, कला की देवी हैं, हर ज्ञान का सार है,
संस्कृति समुन्नत करती, देती सबल आकार है,
सुख-वैभव व नृत्य-उत्सव को, विद्वता से सँवारती,
गूँगे को वाचाल बनाती, अज्ञानी को तारती
परिश्रम, लगन, समर्पण को माँ, विद्या का उपहार है।
वागेश्वरी के वीणा की, गूँजती झंकार है।

**रत्ना प्रिया**
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर चंडी,
नालंदा

# वेदमाता भवानी

करूँगी सदा वंदना मैं तुम्हारी,
भवानी सुनो प्रार्थना है हमारी।
बना दो विवेकी हरो अंधियारा,
पुत्री हूँ तुम्हारी बनो माँ सहारा।
मिटा दो भवानी अज्ञता हमारी,
करूँगी सदा वंदना मैं तुम्हारी।।
पता है तुम्हें मैं बड़ी हूँ अज्ञानी,
तुम्हीं वेदमाता तुम्हीं हो भवानी।
सुनो माँ भवानी पुत्री हूँ तुम्हारी,
करो माँ कृपा याचना है हमारी।
चली आ सुनो अर्चना ये हमारी
करूँगी सदा वंदना मैं तुम्हारी।।
सुझा दो भवानी नया छंद कोई,
मनोहारिता रूप मैं देख खोई।
रचूँ गीत कोई इच्छा है हमारी,
बुलाती तुम्हें लाडली ये तुम्हारी।
लगा दो किनारे तरी माँ हमारी,
करूँगी सदा वंदना मैं तुम्हारी।।,

**कुमकुम कुमारी "काव्याकृति""**
मध्य विद्यालय बाँक,जमालपुर,बिहार

# पढ़ने को स्कूल चलें हम

नित पढ़ने को स्कूल चलें हम,
किसी बात पर नहीं लड़ें हम।
जीवन में खुशियाँ भरने को,
नित बस्ता लें स्कूल बढ़ें हम।
हम नहीं करें कभी आना कानी,
नहीं चलेगी अब यह मनमानी।
है पढ़ना ही हम सबकी शान,
तभी मिलेगी हम सबकी पहचान।
नहीं किसी से हो कोई झगड़ा,
नहीं किसी से हो कोई रगड़ा।
अक्षर अक्षर जो हमें सिखाते,
उनके प्रति सदा सम्मान दिखाते।
जो अभी चाहे सो बन जाएँ,
ऐसी उम्र कहाँ फिर पाएँ।
सदा सफल व्यक्ति वही होता है,
जो समय न अपना बहुमूल्य खोता है।
अपना संगी साथी उसे बनाएँ,
पढ़ने से जो कभी दिल न चुराएँ।
संगत ही हमारी पहचान कराती,
है दिल के सभी यह राज बताती।
हम सुसंगति में रहें सदा ही,
लफड़े में कभी न पड़ें कदा ही।
अपकार का मार्ग न कभी अपनाएँ,
ज्ञान की ज्योति सदा जलाएँ।

**अमरनाथ त्रिवेदी**
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड-बंदरा,जिला-मुजफ्फरपुर

# नवजीवन संचार

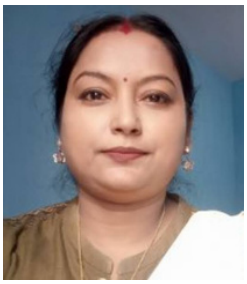

शीत शरद की हो रही विदाई
धरती मानो ले रही अंगड़ाई
ऋतुराज की हो रही अगुवाई
प्रकृति बसंती रंग में रँगाई।
गुनगुनी धूप, स्नेहिल हवा
सुंदर दृश्य, सुगंधित पुष्प
मंद-मंद मलय पवन,
वृक्षों पर बौर की सुगंध
अमराई की भीनी-भीनी
खुशबू हवा में फैलाई।
प्रकृति ने श्रृंगार करवाई
तरुवर लताएँ नवपल्लव-
नवकुसुमों से सजी-सँवरी
नई-नई कोपलें फूट पड़ीं
कोयल की कूहु-कुहू बोली
लहलहाती फसलों से भरी
पीली सरसों के फूलों से भरी
रंग बिरंगे मोहक फूलों से भरी
धरती और प्रकृति लग रही
जैसे अल्हड़ नवयौवना
पीली सरसों के
फूलों की चुनरी ओढ़े
फूलों से मोहक सिंगार किए
आम, महुए की मादकता लिए
तितलियों से अठखेलियाँ करती
अनुपम सौंदर्य बिखेर रही
पक्षियों का कलरव
जैसे पायल की झंकार
मौसम की नई बयार
सबों में कर रही
नवजीवन संचार।
बसंती रंग में रंगी
धरती सब में
उमंग उल्लास भर रही
रंग-बिरंगे रंगों से
धरती के जीवन को
रंग रंगीला बना रही
प्रकृति बसंती रंग में रँगाई

**अपराजिता कुमारी**
रा. उ. म. विद्यालय जिगना जगरनाथ
-हथुआ गोपालगंज

# वासंती महक

पीली-पीली सरसों की बगिया,
लहराए खेतों में नव अभिलाषा।
पतझड़ की उदासी को छोड़कर,
लाया वसंत हर्ष की परिभाषा।
प्रकृति ने ओढ़ी हरियाली चूनर,
फूलों में घुली नव मधुर मुस्कान।
कोयल गाए प्रेम का अनोखा हूनर,
मन में जागे नवजीवन का ज्ञान।
हल्की-हल्की बयार में सुगंध बसी,
कुसुमों की बातों में रस घुला है।
रंग-बिरंगे सपनों का उत्सव सजी
हर ह्रदय में वासंतिक प्रेम मिला है।
सरस्वती माँ का हम वंदन करें,
ज्ञान और बुद्धि की हो बरसात।
मन आँगन में रंग वसंत के भरें
मन सद्भावना से भरे हर बात।
वसंत जीवन में भर दे उजियारा,
आशा, उल्लास, उमंग अपार।
वसंत पंचमी का यह पावन पर्व,
लाए हम सब के संग नई बहार।

**सुरेश कुमार गौरव**
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

# सरस्वती वंदना

कर दे निहाल माता,
मेरे सपनों को जगा दे।
जैसी हो तेरी मर्जी,
माँ अपनी शरण लगा ले।
करता हूँ तेरा वंदन,
तेरा स्नेह चाहता हूँ।
अब तक तुझसे जो मिला है,
उसमें कुछ और तू बढ़ा दे।
तेरी भक्ति में है शक्ति,
तेरा आशीर्वाद चाहता हूँ,
यह जीवन तुझे ही अर्पित,
माँ अपनी शरण लगा ले।
कर दे निहाल माता,
मेरे सपनों को जगा दे।
जैसी हो तेरी मर्जी,
माँ अपनी शरण लगा ले।
तू विद्या की हो दात्री,
तू ही बुद्धि की विधात्री।
तेरे चरणों में पड़ा मैं,
मैया पार तू लगा दे।

विद्या के बिना क्या,
यह जीवन है धन्य रहता?
तेरी कृपा बिना क्या,
रूप मानव का निखरता?
कर दे निहाल माता,
मेरे सपनों को जगा दे।
जैसी हो तेरी मर्जी,
माँ अपनी शरण लगा ले।
कुछ न अधिक माँगू,
केवल तेरी कृपा चाहता हूँ।
अपना बना ले मैया,
मै तेरा प्यार चाहता हूँ।
रोते को तू हँसाती,
अज्ञानियों में ज्ञान भरती।
है तेरी अपार शक्ति,
माँ अपनी शरण लगा ले।
कर दे निहाल माता,
मेरे सपनों को जगा दे।
जैसी हो तेरी मर्जी,
माँ अपनी शरण लगा ले।

**अमरनाथ त्रिवेदी**
उत्क्रमित उच्चतर विद्यालय बैंगरा
जिला- मुजफ्फरपुर

# ज्ञान की ज्योति जगा दे माँ

हे माँ शारदे,
वीणावादिनी माँ,
ज्ञान की देवी,
ज्ञान की ज्योति जगा दे माँ,
मैं हूँ तुच्छ अज्ञानी,
मुझे ज्ञान का मार्ग दिखा दे माँ!
हे माँ हंसवाहिनी,
अंधकार निवारणी,
मेरा शब्दकोश है खाली,
भर दे तू इसे बजाकर ताली,
मुझ तुच्छ अज्ञानी को,
ज्ञान की ज्योत जगा दे माँ!
हे माँ बागेश्वरी,
तू बजाती सुरों की बाँसुरी,
मेरे कलम की लेखनी को दे धार,
लेखनी आपसे, आप सबके द्वार,
मुझ तुच्छ अज्ञानी को,
ज्ञान की ज्योत जगा दे माँ!
हे माँ भारती,
ज्ञान सबमें तू ही भरती,
तमस दूर हो हृदय हमारे,
आशा और विश्वास तुम्हारे,
मुझ तुच्छ अज्ञानी को,
ज्ञान की ज्योति जगा दे माँ!

हे माँ ज्ञानदा,
आँखों पर पड़े न मेरे परदा,
माँ मेरी कविता में तू,
भर दे वीणा की झंकार,
मुझ तुच्छ अज्ञानी को,
ज्ञान की ज्योत जगा दे माँ!
हे माँ वाग्देवी,
मुझे दे सद्बुद्धि,
भेंट करूँ तुझे कलम पुष्प से,
गूँथे हुए सब हार,
मुझ तुच्छ अज्ञानी को,
ज्ञान की ज्योति जगा दे माँ!

**विवेक कुमार**
भोला सिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय पुरुषोत्तमपुर,
कुढ़नी, मुजफ्फरपुर

# सरस्वती वंदना

माँ शारदे की पूजा अर्चना
कर लो मन से आप,
मिले आशीष माँ का उनको
पूरा हो सब काज।
हम अज्ञानी बालक माता
दीन, दया के पात्र,
करो कृपा एक बार माता
बस आपकी आस।
फैला यहाँ अज्ञान तिमिर है
मैं भी हूँ बड़ा मूढ़,
कृपा करो हमपर हे माता
करो ज्ञान आरूढ़।
श्रद्धा,भक्ति और उमंग का
लगा हुआ है मेला,
पूजा की भी थाल सजी है
बड़ी मनोरम बेला।
हम याचक हैं तेरे माता
सुनलो याचना आप,
अगणित अधर्म किए हैं हमने
कीजिए उसे आज माफ।
श्रद्धा के दो पुष्प लिए माँ
खड़ा हूँ तेरे द्वार,
होगी स्वीकार मेरी भी भक्ति
मन में है विश्वास।
आलोकित करो हे माता
पथ सभी का आज,
यदि मिले आशीष आपका
सफल हो सारे काज।

**भवानंद सिंह**
रानीगंज, अररिया, बिहार

# प्रार्थना

भक्त खड़ा तेरे द्वार, सुन लो मात पुकार।।
नज़रिया फेर कर मातु, कर दो तुम उद्धार।
रचे हम क्या दो बतला, शब्दों को दो- चार।
वर्णन तेरी कर सकूँ, लेखन को दो धार।।
वर्ण सीपि को चुनें बिना, बना न पाऊँ हार।
मैं मतिमंद कहाँ चुनूँ, सिंधु गर्त निस्तार।।
नीर क्षीर विवेक भरो, होकर हंस सवार।
सात सुरों से लय सजा, छेड़ो वीणा तार।।
अश्रु धारा से माँ लूँ, तेरी चरण पखार।
स्वर ज्ञान का दान करो, सुन लो मातु पुकार।।
कलुष पंक का नाश कर, उत्पल करो बिचार।
रख दो सिर पर हाथ माँ, कीर्ति करो विस्तार।।
निर्मल मन मेरा करो, माँ इतना उपकार।
सद्कर्म में लीन रहें, पथ कर दो गुलजार।।
लेकर चरण धूल माँ, निज मस्तक पर धार।
दे दो मुझे ऐसा वर, हों भव सागर पार।।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

# कुपोषण

शरीर का समुचित विकास हो
कर सकें काम आसानी से।
इसके लिए ऊर्जा चाहिए
जो मिलता खाना पानी से।।
भोजन समय से संयमित हो
खाएँ संतुलित आहार को।
गुणवत्ता समय मात्रा बिना
झेलें कुपोषण की मार को।।
कार्बोहाइड्रेट वसा लें
खनिजलवण प्रोटीन रखते।
भोजन में रख मात्रा इनकी
है संतुलित आहार बनते।।
अक्सर इनके असंतुलन से
कुपोषण शरीर में फैलता।।
रक्ताल्पता घेंघा रोग जो
सूखा रोग रतौंधी होता।।

संग में कमजोरी अनिद्रा
बीमारियों का जड़ हैं बोते।
खाकर पनीर अंडा मछली
दूर कुपोषण को हैं करते।।
हरे पत्तों की सब्जियाँ हो
दूध दही घी दाल लेना।
ताजा भोजन समय से करें
हैं कुपोषण को मात देना।
संतुलित आहार खाते जो
हैं दूर कुपोषण को करते।
स्वस्थ सदा तन रहते सबके
शुभ विचार भी मन में पलते।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज,पटना

# ब्रह्मांड की दिव्य कहानी

सूरज ज्योति का है आगार
उजियारे का सौम्य नगर।
किरणें इसकी छू लें धरती,
हरियाली भर जाए घर।।
नीला नभ फैला है कितना,
आँखों से यह मापा ना जाए।
तारे लिखे दीप सरीखे इसमें,
जगमग-जगमग राह दिखाए।।
नीहारिका के घूँघट मोती,
आकाशगंगा झूले मौजी।
सपनों जैसे दृश्य अनोखे,
झिलमिल ज्योति करें मनमौजी।।
ध्रुवतारा लगता प्रहरी जैसा,
अडिग अटल नभ में समाया।
नाविक, राही, सबको राह दे,
हर युग में पथप्रदर्शक आया।।
चंदा चूमे इस नभ की देहरी,
शीतलता का प्रतीक दूत बना।
रातों की चादर पर चाँदी चमके,
खग मंडल का यह रत्न बना।।
ग्रह सभी निज पथ पर चलते,
नियमों की यह ज्योति अनूठी।
प्रकृति उपहार सदा अटल रहते,
ईश्वर की यह रचना अनोखी।।
ब्रह्मांड का यह खेल निराला,
गति अचल, पर दृश्य दिव्य।
चिरकाल तक रहेगा विस्तृत,
ज्योति अमर, अमर संगीत।।

**सुरेश कुमार गौरव"**
उ. म. वि. रसलपुर,फतुहा,पटना, बिहार

# कुछ खबर है आपको

कुछ खबर है आपको
आप बैठे रेस्तरां में जब
ले रहे सुस्वादिष्ट व्यंजन का स्वाद
हाथों में डाले पत्नी का हाथ
पकड़ा मोबाइल बच्चे के हाथ
कर रहे आप दोनो मियां बीबी बात
खो गया है बच्चा कही आपका
नहीं पता उसे क्या होती है
अलग-अलग मिठाई की मिठास
नहीं पता उसे क्या है
अलग- अलग व्यंजन का स्वाद
मशगूल है वह अपनी अलग ही भ्रामक दुनिया में
व्यंजन खत्म होने के क्रम में आप जब
दबाते है अपने हाथों से दोनों उसके गाल
तब चबाता निगलता है लिए अपने निवाल
खाने में होते विलंब को देख कर
जब झल्ला पड़ते मियां- बीबी साथ
पड़ता उसके कोमल मन पर बड़ा ही घात
देखकर उसके असंतुलित व्यवहार
पहुंचते जब आप चिकित्सक के पास
परामर्श देकर चिकित्सक बताता
आपको है, नहीं खबर
बेटे का प्रति क्षण हो रहा उसका मानसिक अपहरण
इस दुर्दशा का बोया तूने ही कारण
देकर आप उसे अपना भरपूर समय व स्नेह सिंचन
करे इस दोष का यथाशीघ्र निराकरण
करे इस दोष का यथाशीघ्र निराकरण।

**अवनीश कुमार**
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर
बेगूसराय
बिहार शिक्षा सेवा

# अपना सूरज

विशाल आकाशीय पिंड जो,
अपना प्रकाश फैलाता है।
हम उसको हैं कहते तारे,
नभ में सदा टिमटिमाता है।
उनमें से है एक सूर्य भी,
हमारे निकट जो रहता है।
दिखे आग का गोला जैसा,
नाभिकों का विलय होता है।
हाइड्रोजन हीलियम में,
परमाणु बदलते रहता है।
एक सौ तेरह पृथ्वी जहाँ,
आसानी से रह सकता है।
है इतनी दूरी पर हमसे,
जो प्रकाश गति से नपता है।
जिसके प्रकाश को आने में,
पाँच सौ सेकंड लगता है।
दृश्य अदृश्य प्रकाश स्रोत जो,
पृथ्वी को उर्जा देता है।
यह जीवन कारक धरती का,
सदा अंधियारा हरता है।

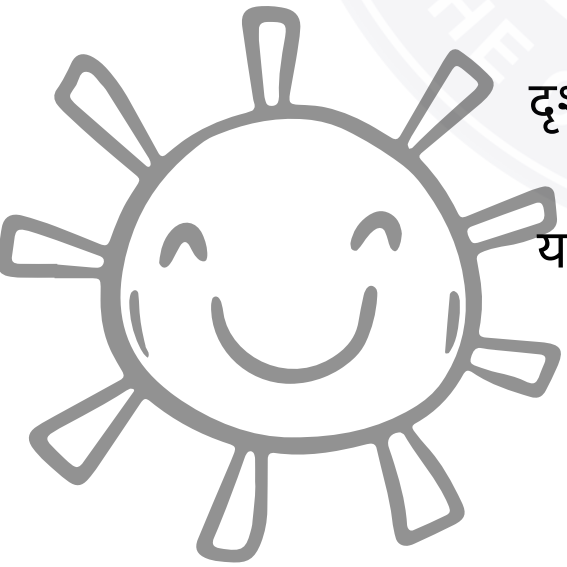

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज, पटना

# हाथ बढ़ा प्रभु मंगल दीजै

है अति बेकल नैन हमारे।
दर्शन को प्रभु राम तुम्हारे।।
देकर दर्शन काज सँवारें।
नाथ हमें भव से अब तारें।।
थाल सजाकर मैं प्रभु आई।
पूजन पूर्ण करो रघुराई।।
हाथ बढ़ा प्रभु मंगल दीजै।
हे हरि पूर्ण मनोरथ कीजै।।
हूँ कब से प्रभु हाथ पसारे।
आप बिना प्रभु कौन हमारे।।
हे प्रभु देर नहीं अब कीजै।
दर्शन राम मुझे अब दीजै।।
हे रघुनंदन कष्ट निवारें।
दर्शन देकर प्राण सँवारें।।
है अति सुंदर रूप तुम्हारा।
मोह लिया जिसने जग सारा।।
राम लला प्रभु दर्शन दीजै।
हे रघुनाथ कृपा अब कीजै।।
देख मनोहर रूप तुम्हारे।
हर्षित हैं प्रभु नैन हमारे।।
देव हमें अब पार उतारें।
नाथ कृपा कर कष्ट निवारें।।
आप बिना प्रभु कौन हमारे।
हाथ पसार खड़े हम द्वारे।।

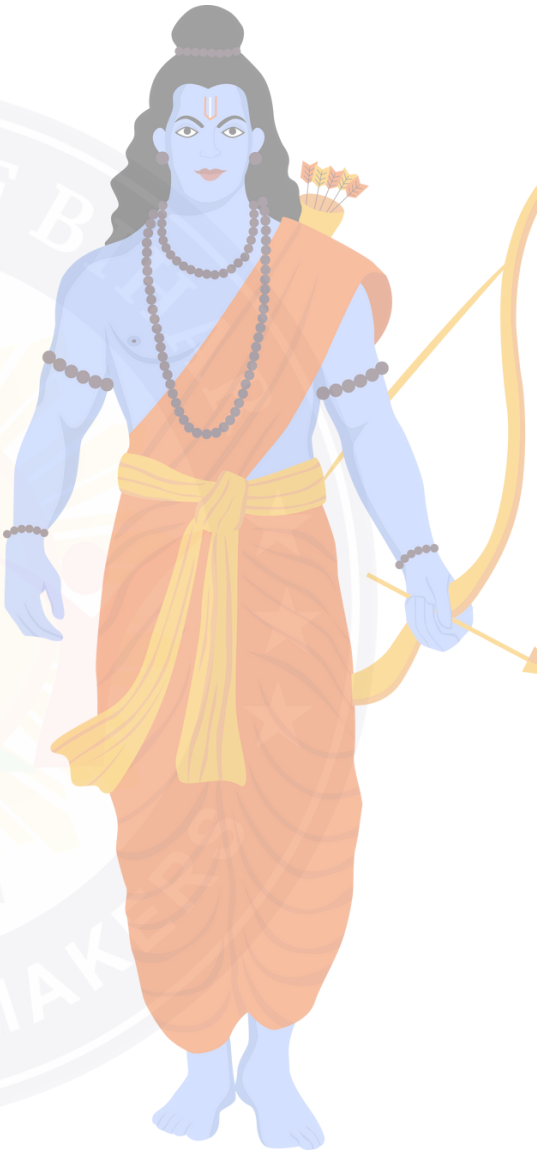

**कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"**
मध्य विद्यालय बाँक, जमालपुर, बिहार

# निर्वाण दृश्य

अस्सी की अवस्था जब होने को आई
बुद्ध ने संघ में निर्वाण की इच्छा जताई
सुनते हीं संघ के बौद्ध भिक्षु
बिलख- बिलख कर रो पड़े।
शाल पेड़ की ओट लिए रोते प्रिय शिष्य आनंद
की ओर बुद्ध चल पड़े
करुणा, ध्यान, निर्वाण का पाठ पुनः आनंद को
बता पड़े।
जीवन- मृत्यु व शास्वत-सत्य संघ समक्ष
समझाया
धम्म उपदेशों को, अष्टांगिक मार्ग- पुनः बौद्ध
भिक्षु समक्ष बतलाया।
प्रिय शिष्य आनंद से समस्त महाजनपदों में
महापरिनिर्वाण का संदेशा भिजवाया।
संदेशा पाते ही प्रथमतः वैशाली
के जन- जन व्याकुल हो उठे
वैशाली के प्रजा- जन भगवान बुद्ध के पीछे ऐसे
दौड़ पड़े ।
मानो जैसे त्रेता युग में
राम- वनवास – गमन की खबर पाते प्रजाजन
पीछे दौड़ रहे।
अदभुत चित्र कुछ उभर रहा
लगता ही नहीं कलयुग का दृश्य चल रहा ।
बुद्ध ने वैशाली की जनता को अपने पीछे आते
देख केसरिया में अपना अंतिम उपदेश सुनाया
वहीं, प्रजाजन को सांसारिक दुखो से मुक्ति पाने
का पुनः अष्टांगिक मार्ग का महत्त्व समझाया
दिया मोह का उदाहरण
ये सांसारिक कष्टों का सबसे बड़ा कारण ।
ऐसे अधीर तुम सब अगर हो जाओगे
अपने कष्टों का निवारण कैसे तुम कर पाओगे?

बुद्ध के धम्म का असर हुआ।
त्रेता युग में भी न ऐसा हुआ।
रोते बिलखते प्रजा जन को
रात्रि अंधेरे में न उन्हें छोड़ा
अपने ज्ञान से उन्हें प्रकाशित किया ।
बुद्ध ने वैशाली की प्रजाजन से अंतिम विदाई ली
सदा हाथ में लिए भिक्षा पात्र उपहारस्वरूप वैशाली की
जनता को दी ।
भिक्षा पात्र प्राप्ति स्थल पर वैशाली गण की जन ने स्तूप
बनाकर बुद्ध की शिक्षा के प्रसार का संकल्प किया ।
घोषित निर्वाण की तिथि आई।
पावा के प्रिय शिष्य कुंद ने भगवान को सुक्ति खिलाई।
भगवान बुद्ध बोले मेरे जीवन में दो भोजन सबसे प्यारा-
न्यारा
जिसे खाकर मैं हुआ निधान ।
प्रथम सुजाता के हाथो की खीर जिससे ग्रहण कर मुझे
मिला बोधिसत्व का ज्ञान ।
दूजा कुंद के हाथो की सुक्ति
जिससे मुझे मिलने को है निर्वाण ।
रात्रि के तीसरे पहर में मैं करूंगा अपने देह का त्याग ।
महाकश्यप के हाथो हीं हों मेरे अंतिम संस्कार।
ये थे अंतिम वचन भगवान बुद्ध के ।
तय पहर में भगवान बुद्ध ने किया अपने प्राण का त्याग ।
उनके अंतिम संस्कार में हुए चमत्कार कुछ ऐसे
मानो बुद्ध भगवान रूप में हीं आए थे जैसे।
भगवान रूप में ही आए थे जैसे ।

**अवनीश कुमार**
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय
बिहार शिक्षा सेवा(शोध व अध्यापन उपसम्वर्ग)

# अनुशासन जीवन की पहचान

अनुशासन जो जीवन में लाए,
हर मुश्किल में जीत वो पाए।
जो भी समय का मान करेगा,
सपनों को वह साकार करेगा।
सुबह-सुबह उठना है प्यारे,
नियमों को अपनाना सारे।
पहले पढ़ाई, फिर हो खेल,
बिना नियम सब होंगे फेल।
स्कूल समय पर जाना होगा,
हर काम सलीके करना होगा।
गुरुजन की आज्ञा में रहना,
अच्छे गुण सदा ही गहना।
जो भी गलियों में भटकेगा,
समय को यों ही गवाँएगा।
उसका जीवन रुक-सा जाएगा,
हर सपना अधूरा रह जाएगा।
तो आओ हम यह ठान चलें,
हर दिन नियम से काम करें।
डगर पकड़कर अनुशासन की,
खूब पढ़ें,आगे बढ़ें, इसे अपनाकर।

**सुरेश कुमार गौरव,**
प्रधानाध्यापक
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना, बिहार

# रंग बदलते चेहरे

मैं तेरे पास कोई मेरे जैसा शख्स ढूंढता हूं,
तेरी अकड़ को ठिकाने लगता देखता हूं।
तेरी मूंछों को ताव देने पर भी हौसले के साथ गिरते देखता हूं।
तुझे गिरगिट-सा रंग बदलते, सर्प-सा जहर उगलते देखता हूं।
अपना काम निकलवाने में तुझे शहद- सी मीठी बात करते देखता हूं।
तुझे अपनी चाल पर भले ही गुमान क्यों न हो
मैं तुझे मकड़-जाल में फंसते देखता हूं।
तूझे अपनी चालाकी दिखाने में चतुर लोमड़ी बनते देखता हूं
तूझे अपनी असली पहचान छिपाने में भेड़िया बनते देखता हूं।
तूझे अपनी चाल पर भले ही गर्व क्यों न हो
मैं तूझे तेरी क्षीण होती शक्तियों से गीदड़ भभकी देते देखता हूं।
तुझे इच्छाधारी सर्प की तरह मतलब पूरे होते ही अपना रूप बदलते देखता हूं।
तूझे अवसर का लाभालाभ उठाने में कौवे की तरह लपकते देखता हूं।
तुझे अपनी गिद्ध दृष्टि से हर दूसरा शिकार ताकते देखता हूं
तुझे अपनी दंभ का अहसास भले ही न हो
मैं तुझे रंगे सियार की तरह तेरे चेहरे से नकाब उतरते देखता हूं।
अपनी धाक जमाने में तुझे हवाई फायरिंग करते देखता हूं
अपनी थोथी दलील से मैं तुझे हवा बांधते देखता हूं।
अपनी झूठी शानो-शौकत के लिए तुझे हवा- महल बनाते देखता हूं।
तुझे अपने गुमान पर भले ही अहम क्यों न हो
मैं तुझे तेरे गुमान को आसमान से धरातल पर पटकते देखता हूं।
।

लाखों की बातें करने वालों को
चंद सिक्के गिनते देखता हूं।
चंद सिक्को में हीं तेरी ईमानदारी की पोल खुलते देखता हूं।
तुझे पकड़े जाने पर नकली आंसू बहाते देखता हूं।
तुझे अपनी अकड़ पर भले ही गर्व क्यों न हो
मैं तुझे तेरी अकड़ को बंद कमरे में चरणन गिड़गिड़ाते देखता हूं।
तूझे तेरे अंतहीन अकड़ पर गुमान भले हीं क्यों न हो ...
मैं तुझे तेरी झूठी शान को खुद की हीं आंखो में गिरते देखता हूं।
तेरे घमंड को अपने ही बोझ से दबते देखता हूं।
तुझे अपनी कल की छल पर भले ही गर्व क्यों न हो
मैं तुझे तेरे होठों पर मुस्कान लेकिन तेरी ललाट पर हरदम चिंता की शिकन देखता हूं।
तू बता या न बता....
मैं तुझे पानी बिन प्यासी मछली की तरह तड़पते देखता हूं।
तूझे तेरे खोखले दलील की गूंज सुनाई दे या न दे...
मैं तुझे अब हर घड़ी घुट-घुट कर मरते देखता हूं।
तुझे अपने ही जहर में तिल- तिल मरते देखता हूं।
मैं तेरे पास कोई मेरे जैसा शख्स ढूंढता हूं,
तेरी अकड़ का धुंआ उठते देखते हूं।
तेरी अकड़ को मिट्टी में मिलते देखता हूं।
तेरी अकड़ की राख को हवा में उड़ते देखता हूं
तेरी अकड़ को लोटे में भरते देखता हूं।
तेरी अकड़ को गंगा-जमुना में बहते देखता हूं।
मैं तेरे पास कोई मेरे जैसा शख्स ढूंढता हूं
तेरी अकड़ को ठीक से ठिकाने लगता देखता हूं ।

**अवनीश कुमार**
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय विष्णुपुर, बेगूसराय
बिहार शिक्षा सेवा(शोध व अध्यापन उपसम्वर्ग)

# दिन-रात

हम बच्चों के मन में आती
तरह तरह की है बातें।
गुरुवर हमें बता दो इतना
क्यों होती हैं दिन रातें।
सूरज छुपते कहाँ रात में
उजियारा दिन में करते।
रात में शीतल रौशनी दे
चाँद कहाँ दिन में रहते।
सूरज दादा चंदा मामा
नहीं क्यों संग में आते।
जिज्ञासा हो जो बच्चों में
गुरु मौन कहाँ रह पाते।
सुनो गौर से बच्चों तुमको
बात सही है बतलाते।
सूरज दादा चंदा मामा
आसमान में हीं रहते।
सदा अक्ष पर धरती अपने
लट्टू सदृश हीं घूमते।
आएँ जब भी सूर्य सामने
दिन हम उसको बतलाते।
छिप जाता जो भाग सूर्य से
वहाँ रात हैं बतलाते।
धरती के चहुँ ओर चंद्रमा
है चक्कर रोज लगाते।
यही वजह है सूरज दादा
चंदा संग नहीं आते।
दिन-रात सदा सुख-दुख जैसे
आते जाते हैं रहते।
सूरज दादा जैसे बच्चों
तुम हरपल रहो दमकते।
रौशनी लिए अच्छाई की
तिमिर बुराई से बचते।

**राम किशोर पाठक**

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

# मन करता मैं भी कुछ गाऊँ

जीवन खुशियों से जब भरता,
मन करता मैं भी कुछ गाऊँ।
जब शीतल मंद सुगंध हवा हो,
खुशियों के संग मैं गीत सुनाऊँ।
तरुनाई जब पुरवाई की हो,
मन करता मैं भी कुछ गाऊँ।
जीवन के पावन पलों में,
मन करता कुछ गीत सुनाऊँ।
जीवन की बगिया जब महकी,
सुर में सुर और ताल मिलाऊँ।
नयना जब खुशियों से भर आए,
मन करता मैं भी कुछ गाऊँ।
झोंके हों जब मंद पवन के,
दिल से प्रेम का राग बताऊँ।
दिल के हर कोने से भी,
मीत सरिस एक गीत सुनाऊँ।
बासंती परिधानों की हो जब बेला,
उसके संग मन प्रीत बढ़ाऊँ।
जब दिल में प्रेम हिलोरें लेती,
तब मन करता मैं भी कुछ गाऊँ।
श्व गुरु परम।।

**अमरनाथ त्रिवेदी,**
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड- बंदरा, जिला- मुजफ्फरपुर

# संत शिरोमणि रविदास

माघ मास की पूर्णिमा, दिन था वो रविवार।
रविदास था नाम पड़ा, काशी में अवतार।।
कलसा गर्भ से जन्में, पिता रग्घु के द्वार।
गोवर्धनपुर ग्राम में, देने पथ संसार।।
मन चंगा भाव जो रखें, पा ले गंगा धार।
सीख दिया संसार को, तजिए बुरा विचार।।
भक्ति भजन के मूल थे, निश्छल सद्व्यवहार।
अभिमान त्याग रैदास, रूढ़ता पर प्रहार।।
आडंबर को तोड़कर, ऊँच-नीच धिक्कार।
संत शिरोमणि हो गये, पूज रहा संसार।।
मीरा के वो गुरु बने, उनके गुरु करतार।
ब्रह्म भाव रैदास के, वाणी विमल विचार।।
सहज भाव कविता रची, भाषा सरल उदार।
थवल कर्म रैदास के, बने हृदय झंकार।।
गुरु ग्रंथ की वाणी में, उनकी अमर पुकार।
रैदास को नमन करे, पाठक बारंबार।।

**राम किशोर पाठक**

प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

# गुरु का गौरव

ज्ञान दीप की ज्योति जलाकर, तम को दूर भगाते हैं,
शिक्षा के उजियारे पथ पर, जीवन को सिखलाते हैं।
अंधकार जब छाए मन में, राह न कोई सूझे,
गुरु कृपा की एक किरण ही, हर बाधा को बूझे।
नैतिकता के नवल सुमन से, जीवन को महकाते,
कर्तव्य-धर्म निभाने वालों, को सच्ची राह दिखलाते।
सपनों को आधार मिले जब, आशा का संचार हो,
ऐसे शिक्षक चरण हमारे, श्रद्धा से सत्कार हो।
शिष्य हृदय में दीप प्रज्वलित, शिक्षक की पहचान,
सुरेश कहें यही, वंदन उनको, जो बनते हैं सम्मान।

**सुरेश कुमार गौरव**
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना, बिहार

# कबीर फिर ना आना इस देश

रंजिशे बढ़ने लगी है अब इस देश में
बात-बात में धार्मिक उन्माद का आतंक
दिखने लगा है अब इस देश में
हिंदू मुस्लिम लड़ पड़ते हैं अपने हीं देश में
बात-बात में तलवारें चमकने लगी है इस देश में
तेरे दोहे का दाह कर रहे नेता गण इस देश में
कबीर फिर ना आना इस देश में कबीर फिर ना आना इस देश में
सांप्रदायिकता का विष घोल रहे हैं नेता गण इस देश में
सच्ची भारतीयता नहीं दिखता इस देश में
तेरे दोहे को उचित सम्मान नहीं दे सका इस देश ने
तेरी शिक्षा का सार कोई नहीं समझता अब इस देश में
कबीर फिर ना आना इस देश में कबीर फिर ना आना इस देश में
राम-रहीम, कृष्ण-करीम अब ना एक इस देश में
बात बात मे तलवारें गोली निकल जाती हैं इस देश में
कैसे कहूं एक बार फिर से
कबीर फिर आना इस देश में
कबीर फिर आना इस देश में

**अवनीश कुमार**
बिहार शिक्षा सेवा
व्याख्याता
प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
विष्णुपुर बेगूसराय

# रूप घनाक्षरी

अनुपयोगी का साथ,
हानिकारक का हाथ,
प्रदूषण कहलाता,
बिगड़ जाता है काज।
भूमि जल वायु संग,
ध्वनि प्रकाश का ढंग,
या तकनीकी संचार,
सभी प्रदूषित आज।
प्लास्टिक को रोककर,
पेड़ पौधे रोपकर,
नियंत्रित हैं करते,
प्रदूषण का मिजाज।
बदल रहा संसार,
दूषित हुआ विचार,
व्यवहार में सुधार,
क्या ला पाएगा समाज।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश
पालीगंज, पटना

# शिक्षक: ज्ञान के दीपक

शिक्षक हैं वो दीप प्रखर, जो तम को हरने आते हैं,
ज्ञान-ज्योति से जगमग करके, जीवन पथ दिखलाते हैं।
संस्कारों की निधि अनमोल, उनके शब्दों में बसती हैं,
सही दिशा की सीख सदा, हर विद्यार्थी को मिलती हैं।
स्वार्थ रहित परिश्रम उनका, हर शिष्य को आगे बढ़ाएँ,
संघर्षों से डरना मत, यह मंत्र सदा शिक्षक सिखलाएँ।
सपनों को आकार दिलाने, हर क्षण नाम संज्ञा पाते हैं,
कर्तव्यनिष्ठ शिक्षक अपने, युग-युग तक पूजे जाते हैं।
मान-सम्मान से ऊपर उठ, सेवा में जो जीवन अर्पित करते,
ऐसे गुरु को शत्-शत् वंदन, जो सदा ज्ञान बढ़ाते रहते।

**सुरेश कुमार गौरव**
प्रधानाध्यापक'
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

# सच में जीवन जीना सीखें

रोते को हँसाना सीखें,
जग में नाम कमाना सीखें।
कभी न झगड़ा झंझट करें,
दिल खुशियों से भरा करें।
मन से दुख को जाएँ भूल,
यही जीवन में रखना वसूल।
जीवन में सुख-दुःख आता जाता,
यही प्रकृति को बड़ा सुहाता।
क्रोध, ईर्ष्या को न दिल में लायें,
सबके मन निज बातों से हर्षायें।
नई किरणें नई हैं बातें,
रोज करना नई शुरुआतें।
कृतज्ञ बनें, धन्यवाद करें हम,
ईश्वर से कभी न विमुख रहें हम।
ईश्वर हैं जो सबकी सुनते,
सबकी माँगे पूरी करते।
हम बालक हैं भोले नादान,
झोली भर हम सबको दें वरदान।
परम पिता का यह जग है सारा,
उनका रचा सुंदर संसारा।
कभी न ईर्ष्या, द्वेष बढ़ायें,
मातृभूमि को सदा शीश नवायें।
माता-पिता सम देव हमारे,
उनके ही हम राज दुलारे।
उनका कहना नित ही मानें,
निज जीवन को सफल तब जानें।

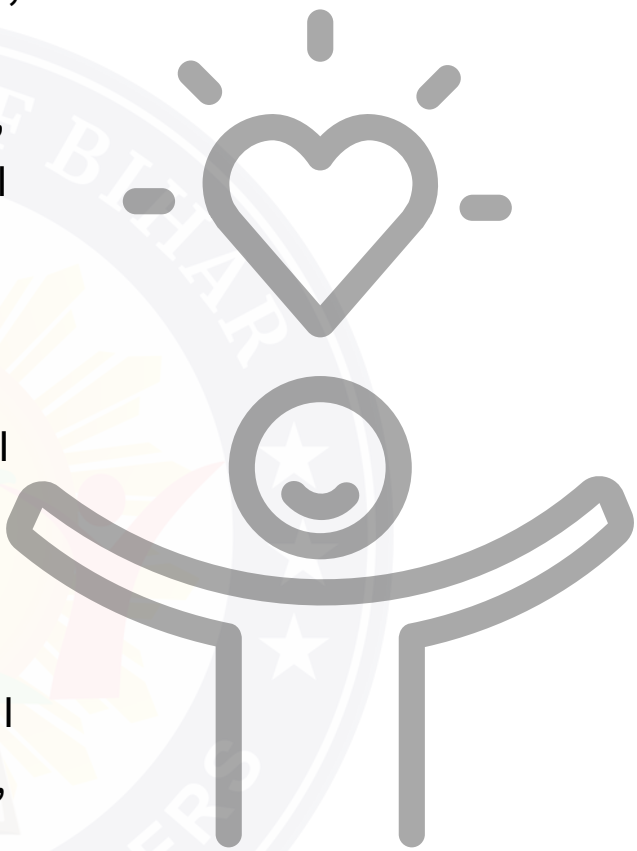

**अमरनाथ त्रिवेदी**
पूर्व प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैंगरा
प्रखंड बंदरा,जिला-मुजफ्फरपुर

# प्रकृति

नित्य कर्मरत रहती प्रकृति, तब जग सुंदर हो पाता है।
जग में वही सफल हो पाता जिसे परिश्रम भाता है।।
नभ में सूरज चाँद-सितारे, नित्य समय पर आते हैं,
जिम्मेदारी सदा निभाते, कभी नहीं घबराते हैं,
पृथ्वी निरंतर घूर्णन करती, न थकती न सुस्ताती है,
दिवस-रात्रि ससमय होते हैं, चूक नहीं हो पाती है,
धरती के पालन-पोषण से, प्राणी जीवन पाता है।
नित्य कर्मरत रहती प्रकृति, तब जग सुंदर हो पाता है।।
वृक्ष-वनस्पतियाँ इस धरा पर, प्राणवायु बिखराती है,
पोषित-संचित पुष्पित करके, माँ जैसी दुलराती है,
कालकूट बन विष को पीते तरुवर मित्र कहाते हैं,
जगत कल्याण में रत रहकर, आशुतोष बन जाते हैं,
इन विटपों के प्रति रोम-रोम नतमस्तक हो जाता है।
नित्य कर्मरत रहती प्रकृति, तब जग सुंदर हो पाता है।।
नदियाँ झरने और समुन्दर, जलाधिपति कहलाते हैं,
निमंत्रण पाकर वसुंधरा का मेघ जल बरसाते हैं,
जल चक्र के नियमित रहने से, पृथ्वी पोषण पाती है,
शस्य-श्यामल-सी शोभित धरती नीलग्रह कहलाती है,
प्राकृतिक संसाधन जल यह, जग की प्यास बुझाता है।
नित्य कर्मरत रहती प्रकृति, तब जग सुंदर हो पाता है।।
सत्व, रज, तम के सम्मिश्रण से, मानव आकृति पाता है,
पंचभूतों की इस सृष्टि में, तन धारण कर आता है,
नर से नारायण बनने में, प्रकृति सहायक होती है
पंक में खिला ब्रह्मकमल-सा, और सीप में मोती है
मन की प्रकृति साध मनुज तन महामानव कहलाता है।
नित्य कर्मरत रहती प्रकृति, तब जग सुंदर हो पाता है।।

**रत्ना प्रिया 'शिक्षिका**

उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी, नालंदा

# दोहावली

गिरिजापति भूतेश शिव, आया हूँ दरबार।
विनती बारंबार है, करिए बेड़ा पार।।
अंतक अक्षय आप हो, उमापति विश्वनाथ।
नीलकंठ शिवमय सदा, उमा शक्ति है साथ।।
शादी भोलेनाथ की, महिमा अपरंपार।
आदिशक्ति के साथ में, हर्षित है संसार।।
शिव देवों के देव हैं, करिए मन से ध्यान।
अंतस् निश्छल भाव में, बसते कृपानिधान।।
परहित हो हर जीव का, करिए सुघर विचार।
द्वेष रहित जनभाव का, भरिए मधु सुख सार।।
भरिए उच्च विचार मन, करिए जन कल्याण।
फिर संकट के काल में, ईश करेंगे त्राण।।
पर्व महाशिवरात्रि में, करिए शिव का ध्यान।
आदिदेव के साथ हो, आदिशक्ति का मान।।
भाव हृदय शिवमय रखें, करें हाथ उपकार।
कर्म शुभद सौभाग्य दें, पाएँ खुशी अपार।।
गंगा पावन नीर से, हो शिव का अभिषेक।
निर्मल मन के भाव में, कभी नहीं हो टेक।।

**देवकांत मिश्र 'दिव्य'**
मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज,
भागलपुर, बिहार

# चंद्रशेखर आजाद

भारत है वीरों की धरती,
आओं मिलें आजाद से।
अंग्रेज सदा काँपा करते,
जिनके हीं शंखनाद से।
ब्राह्मण कुल का ऐसा बाँका,
डर पाया न परिवाद से।
न्यायाधीश अचंभित-सा था,
निडरता के संवाद से।
भारत है वीरों की धरती,
आओं मिलें आजाद से।
जैसा नाम काम वैसा हीं,
जाना जगत आजाद से।
अमर हो गया लाल देश का,
रहे भारत आबाद से।
कोड़े खाकर भी स्वर गूँजा,
देश के जिन्दाबाद से।
भारत है वीरों की धरती,
आओं मिलें आजाद से।
स्वाभिमान हीं नाम पिता का,
आश्रय जेल आबाद से।
क्रांति ध्वजा लहराया उसने,
याचक नहीं संवाद से।
अचूक निशाना सदा लगाना,
बन गयें थे उस्ताद से।
भारत है वीरों की धरती,
आओं मिलें आजाद से।
छीन ली नींद काकोरी में,
अंग्रेजियत की लाद से।
नाकों दम था किया ब्रिटिश को,
क्रांतिकारी फौलाद से।
था खुद हीं गोली मार लिया,
जीवन जिया आजाद से।
भारत है वीरों की धरती,
आओं मिलें आजाद से।

**रामकिशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया इंगलिश पालीगंज,पटना

# प्रकृति का संदेश

हरी-भरी यह धरती अपनी, इसको हमें बचाना है।
पेड़ लगाकर, जल बचाकर, हरियाली फैलाना है॥
नदियाँ बहें सदा निर्मल-सी, कलुष नहीं जल करना है।
नीला नभ हो,शुद्ध पवन हो,ऐसा जग हमें गढ़ना है॥
फूल खिलें हर बाग-बगीचे, तितली नाचे गाती हो।
कोयल बोले, हवा महकती, हरियाली लहराती हो॥
पंछी गाएँ मधुर तराने, नभ में उड़ते जाएँ।
ऐसी सुंदर धरती के हम, प्रहरी सच्चे बन पाएँ॥
सूरज हमको सीख सिखाता, जग को निरंतरता देना।
चंदा कहता मृदु भावों से, सबको शीतलता देना॥
नदियाँ कहतीं, बहते रहना, सबके हित में जीवन हो।
पेड़ सिखाते, फल,छाया देना, औरों के हित अर्पण हो॥
आओ मिलकर हम संकल्पित, प्रकृति सुरक्षा करेंगे।
पेड़ लगाएँ, जल बचाएँ, जग में नया रंग भरेंगे॥
हरियाली का दीप जलाकर, सृष्टि को महकाएँगे।
स्वच्छ, सुंदर, हरी धरा को, मिलकर और सजाएँगे॥

**सुरेश कुमार गौरव**

उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

# निरख सुहानी भोर

निरख सुहानी भोर,
सुखद विहंग शोर,
प्राणवायु का सहर्ष,
अनुभव कीजिए।
ललित प्राची की लाली,
भृंगी बाग मतवाली,
भीनी गंध प्रसूनों की,
तन-मन लीजिए।
कोयल की कूक प्यारी,
लता की शोभा है न्यारी,
मादक बौर आम्र से,
मन न पसीजिए।
सरिता की शुचि धार,
पेड़-पौधों का संसार,
हरियाली भू लाकर,
मन शांति दीजिए।

**देव कांत मिश्र'दिव्य' शिक्षक**

मध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज
भागलपुर, बिहार

# डॉ. राजेन्द्र प्रसाद: युगपुरुष की गाथा

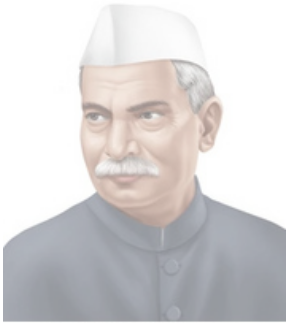

३ दिसंबर १८८४,
बिहार की माटी में जन्म हुआ।
ज्ञान, सत्य, सेवा का दीप,
नवयुग का प्रकाश दीप्त हुआ।
बाल्यकाल से बुद्धिमान थे,
विद्या के अनुपम भंडार थे।
हर परीक्षा में प्रथम रहे,
कर्तव्य-पथ के सटीक रडार थे।
न्याय सीखा, ज्ञान बढ़ाया,
बने अधिवक्ता देश महान।
गाँधी जी से प्रेरित होकर,
छोड़ दिया वह धन-सम्मान।
आजादी की अलख जगाई,
अंग्रेजी सत्ता अस्वीकार किया।
भारत माँ की सेवा खातिर,
मातृ देश धर्म स्वीकार लिया।
संविधान जब बन रहा था,
नेतृत्व आपका प्रखर था।

राष्ट्रपति बनकर भी आपका,
सादगी जीवन अति शिखर था।
किसानों के थे आप रखवाले,
जनता के थे जनसेवक महान।
हर हृदय में वास आपका,
भारत के थे मान-अभिमान।
२८ फरवरी १९६३,
सेवा का दीपक बुझ गया।
किन्तु कर्म और आदर्श आपका,
भारत के दिलों में बस गया।
आपसे हमने सीखा सब कुछ,
कर्तव्य पथ न छोड़ेंगे।
राष्ट्रभक्ति और सत्यनिष्ठा,
सदैव हृदय में बोएँगे।

**सुरेश कुमार गौरव,**
उ. म. वि. रसलपुर, फतुहा, पटना (बिहार)

# राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

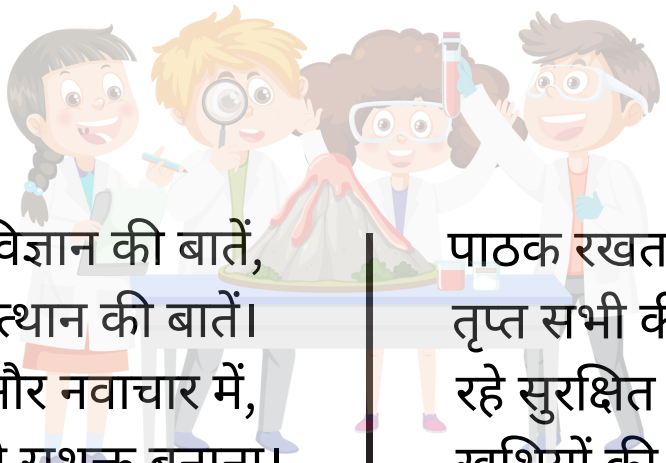

हम करें विज्ञान की बातें,
देश के उत्थान की बातें।
विज्ञान और नवाचार में,
युवाओं को सशक्त बनाना।
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस सदा,
जागरूकता चाहे लाना।
केंद्रित रखकर इसी भाव को,
सुखद विज्ञान दिवस मनाते।
हम करें विज्ञान की बातें,
देश के उत्थान की बातें।
मंत्रालय यह प्रचार करती,
प्रौद्योगिकी को अपना सकें।
दूर हो विचार रूढ़िवादी,
जो दृष्टिकोण को बदल सके।
वैज्ञानिकता के विकास में,
याद रमण प्रभाव कर पाते।
हम करें विज्ञान की बातें,
देश के उत्थान की बातें।

पाठक रखता है अभिलाषा,
तृप्त सभी की हो जिज्ञासा।
रहे सुरक्षित जीवन सबका,
खुशियों की जागे प्रत्याशा।
खोज चरमोत्कर्ष पहुँचाते,
नित्य नवीन ओज भर पाते।
हम करें विज्ञान की बातें,
देश के उत्थान की बातें।
दुनिया भी विस्मित हो जाए,
हम ऐसा विकास कर पाएँ।
अंधविश्वास यहाँ मिटाए,
सुखमय जीवन को कर पाएँ।
तकनीक संग मानवता का,
सर्वसुलभ जब राह बनाते।
हम करें विज्ञान की बातें,
देश के उत्थान की बातें।

**राम किशोर पाठक**
प्राथमिक विद्यालय भेड़हरिया
इंगलिश पालीगंज, पटना

# राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

दिवस राष्ट्र विज्ञान का, लाया नव उल्लास।
रमण खोज की याद कर, उर में भरें उजास।।
चिंतन कर विज्ञान का, लाएँ अभिनव सोच।
अन्वेषण की चाह में, नहीं करें संकोच।
तमिलनाडु जन्मस्थली, त्रिचिनापल्ली गाँव।
माँ की साया के तले, पले पूत के पाँव।।
उनके रमण प्रभाव से, बढ़ा देश का मान।
पाकर ही नोबेल से, सफल हुए अरमान।।
क्षमता है विज्ञान में, सही करें उपयोग।
अन्वेषक नक्शे कदम, करते रहें प्रयोग।।
वैज्ञानिक हैं देश के, सच्चे नेक सपूत।
अन्तर्मन की चाह से, करे सदा अभिभूत।।
दिवस राष्ट्र विज्ञान पर, उनको करें प्रणाम।
दिव्य नित्य कहते सदा, हो विज्ञान ललाम।।

**देव कांत मिश्र 'दिव्य'**
उमध्य विद्यालय धवलपुरा, सुलतानगंज, भागलपुर, बिहारदा

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

**क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ?**
**आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ?**
**नीचे दिए गए वेबसाइट,ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े ।**

writers.teachersofbihar@gmail.com

padhyapankaj.teachersofbihar.org

+91 7250818080 | +91 9650233010